RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · MAR 2017 · PAGES 8 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

'कल्चरल रिप्रेजेंटेशन एंड पावर ऑफ मीडिया' पर एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

नई दिल्ली , 23 मार्च 2017 – मीडिया द्वारा कला और संस्ति पर और गहराई से मनन करने और उसेसही पैकेजिंग में पेश करने से कला–संस्ति का प्रस्तुतिकरण भी मीडिया के लिए लाभदायक हो सकता है।डिस्कवरी जैसा एक पूरा चौनल यदि लोक संस्ति पर ऐसे कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकता है, जो दर्शकों कोघंटों तक बांधे रहता है और वह लाभ कमा सकता है, तो अखबारों, पत्रिकाओं तथा अन्य खबरिया चौनलों केलिए भी यह कठिन नहीं होना चाहिए। यह माना जाता है कि टीआरपी के लिए चौनलों का सनसनीखेज होनाआवश्यक है, जबकि सच यह है कि आज युवा वर्ग सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी जड़ों की ओर लौटरहा है, अपनी संस्ति से जुड़ रहा है। यह बात टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज में 'ष्कल्चरल रिप्रजेंटेशन एंड पॉवर ऑफ मीडिया "विषय पर 28 वें एकदिवसीय राष्ट्रीय सगोष्ठी के दौरान प्रो डॉ श्याम कश्यप ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत कर विद्यार्थियों ,शिक्षको , और शोधकर्ताओं को संबोधित करते हुए कही द्य कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो (डॉ) श्याम कश्यप (वरिष्ठ पत्रकार एवं पूर्व उपनिदेशक, डी एच एम् आई , नार्थ कैंपस दिल्ली यूनिवर्सिटी) ,श्री राम कैलाश गुप्ता, (चेयरमैन टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूसंस), प्रो (डॉ) शिवाजी सरकार (आई आई एम् सी ,दिल्ली) , डॉ अजय कुमार (निदेशक ,टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज) , श्री एन बी नायर, (एग्जीक्यूटिव एडिटर, इंडियन साइंस जर्नल), प्रो डॉ अनूप बेनीवाल, (डीन, यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन ,गुरु गोविन्द सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली), व कन्वेनर डॉ अभिषेक सिंह ने दीप प्रज्वलित करके किया।

श्री राम कैलाश गुप्ता, (चेयरमैन टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूसंस) ने कहा की जीवन शैली पर प्रभाव डालनेवाले तत्वों में संस्ति की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस संबंध में संस्ति, उपभगों की वस्तुओं केबारे में लोगों की पसंद, शैली, पहचान और उन्हें स्वीकार करने की क्षमता पर सीधा प्रभाव डालती है औरजीवन शैली को पूर्णतः भिन्न बना सकती है। इस बीच टेलीविजन सबसे महत्वपूर्ण तत्व के रूप में विभिन्नआयु के लोगों के व्यवहार को बनाता बिगाड़ता है। बहुत से परिवार अपने प्रतिदिन के समय का एक भागटीवी देख कर बिताते हैं और मनोरंजन के साथ ही उसके समाचारों और

Contnd. Pg 2

Contnd. from Pg 1

सूचनाओं से भी लाभ उठाते हैं। इसीप्रकार टीवी श्रंखलाएं भी बहुत से लोगों का मनोरंजन करते हुए उनके रिक्त समय को भर देती है और उन्हेंनिरंतर टीवी के सामने बैठने पर बाध्य कर देती हैं।

डॉ अजय कुमार (निदेशक टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज) ने कहा की समकालीन परिवेश में हमारे प्रतिदिन के जीवन चक्रमें और लगभग सभी क्षेत्रों में मीडिया का हस्तक्षेप बहुत बढ़ गया है, इसके अनेक कारण हैं। मीडिया के विभिन्न जनसंचार माध्यमोंने हमें सनसनीखेज खबरों का आदी बना दिया है। ''इतिहास, कला, संसति, राजनीतिक घटना आदि सभी क्षेत्र में सनसनीखेज तत्वहावी हैं। सनसनीखेज खबरें जनता के दिलो–दिमाग पर लगातार आक्रमण कर रही हैं।''

डॉ अनूप बेनीवाल, (डीन, यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन ,गुरु गोविन्द सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली), ने कहा कि लोकतंत्र में मीडिया का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें दो मत नही कि भारतवर्ष मेंआजादी के पश्चात मीडिया ने लोकतांत्रिक संस्थानों को बलशाली बनाने और सत्तारूढ़ दल की स्वेच्छाचारितापर अंकुश लगाने में सराहनीय भूमिका का निर्वाह किया है। परंतु इसके उपरांत भी ऐसे क्षेत्र भी हैं जिनमेंलोकतंत्र के इस चौथे स्तंभ की भूमिका कहीं संदिग्ध सी या गरिमा के प्रतिकूल सी लगती है। जैसे भारतीयसंसति, धर्म और इतिहास के विषय में मीडिया अपनी

अपनी बहुत अच्छी भूमिका नही निभा पाया है। इसी प्रकार रचनात्मक समाचारों की अपेक्षा नकारात्मक समाचारों को मीडिया कहीं अधिक प्रमुखता सेप्रकाशित करता है।

प्रो (डॉ) शिवाजी सरकार (आई आई एम सी ,दिल्ली) ने कहा कि मीडिया की बादशाहत पूरे समाज के सिर चढ़कर बोल रही है। हर आयु वर्ग के लोग इसकी गिरफ्त में हैं। यह लोगों कोहंसाने के साथ रुलाने भी लगी है। अब तो नाबालिग भी इसकी गिरफ्त में आ चुके हैं, जो समाज के लिए शुभ संकेत नहीं है।

श्री एन बी नायर, (एग्जीक्यूटिव एडिटर, इंडियन साइंस जर्नल) ने कहा कि उपभोग, नए युग के मनुष्य के व्यवहार में सबसे स्पष्ट दिखाई देने वाली वस्तु है और इसके माध्यम सेआज के समाज की सोच को समझा जा सकता है। शैली, चयन पर निर्भर होती है और चयन, सूचनाओं तथा संपर्क की प्रक्रिया के फल पर निर्भर होता है। संचार माध्यम ये सूचनाएंलोगों तक पहुंचाते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में किसी व्यक्ति के पास क्या विकल्प हैं और वह क्या चयन कर सकता है। वे अपनी इन अर्थपूर्ण सूचनाओं के माध्यम से लोगों की मान्यताओं,सोच, आकांक्षाओं, चयन और व्यवहार और वस्तुतः उनकी जीवन शैली के संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अलबत्ता संचार माध्यमों के संबंध में लोगों का रुझान एकसमान नहींहोता बल्कि संचार माध्यमों से जिसका लगाव जितना अधिक होगा उतना ही उस पर संचार माध्यमों का प्रभाव भी अधिक होगा।

पहले ,दूसरे एवं तृतीय सत्र की अध्यक्षता क्रमशः डॉ मनोज सिंह एसोसिएट प्रो (विवेकानंद इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज) एवं डॉ सुरेश चंद्र नायक (मानव रचना यूनिवर्सिटी) ने किया ।

कार्यक्रम के अंत में टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के डीन (एकेडमिक्स), प्रो एम एन झा ने धन्यवाद ज्ञापन किया । विभिन्न संस्थानों से आये हुए शिक्षक ,विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये द्य इस मौके पर सभी विभागों के शिक्षक और विदविद्यार्थी मौजूद रह।

–बालकृष्ण मिश्र

Business Plan Competition 2017

Placement Drives in TIAS

आत्म रक्षा पर छात्राओं के लिए कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली , 21 मार्च 2017 टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज एवं डिस्ट्रिक्ट लीगल सर्विसेज अथॉरिटी रोहिणी कोर्ट ,नार्थ वेस्ट डिस्ट्रिक्ट के सहयोग से आत्म रक्षा पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन गया जिसमें संस्था की छात्राओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और आत्म रक्षा केलिए नए –नए तरीकों को सीखा । कार्यशाला के इंचार्ज श्री कपिल ने कहा कि आत्म–रक्षा का सही मायने में अर्थ है अपने आप को पीड़ित की छवि सेआजाद करना है । जब हम आत्म–रक्षा की बात करते हैं तो सिर्फ शारीरिक हिंसा या चोट के बारे में नहीं सोचते । हम आत्म–रक्षा की बात करते हैंहर मौके पर, फिर चाहे वह जलील मजाक व छींटाकशी रोकने की हो, या फिर अचानक बात करते समय बीच में चुप कराए जाने के विरोध की हो।चाहे आदमियों की घूरती नजरों को चुनौती देने का प्रश्न हो या मारपीट का सवाल। आत्म रक्षा के मायने सिर्फ बलात्कार या मारपीट रोकने कामकसद नहीं होता। इसका मतलब है रोजमर्रा के जीवन में "हानिकारक" घटनाओं का सामना करना।

टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के चेयरमैन श्री राम कैलाश गुप्ता ने कहा कि अब समय आ गया है की हम बालिकाओं को आत्मरक्षा संबंधीप्रशिक्षण एवं परामर्श, विषम परिस्थितियों में बचाव के उपाय एंव आत्मरक्षा के साधनों की जानकारी दें ताकि वे अपनी रक्षा कर पाएं । ऐसा जबहोगा तभी हम एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर पाएंगे ।

टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के निदेशक डॉ अजय कुमार ने कहा कि आत्मा रक्षा की रणनीति हमें सिखाती है अपनी खुद कीकीमत, अपने खुद के लिए प्यार और सम्मान, अपने शरीर पर हक और समाज की प्रतिबद्धता। एक सचेत महिला अगर अपनी हिम्मत , अपनेमजबूत इरादे, जानकारी , कौशल और अपने जीवट का इस्तेमाल करे तो यह आत्म–रक्षा की दिशा में पहला कदम होगा। डॉ कुमार ने बताया किछात्राओं को सुरक्षात्मक ष्टि से आत्मनिर्भर बनाने और बदलते सामाजिक परिवेश में उन्हें शारीरिक रूप से और अधिक सशक्त बनाने के उद्देश्य सेइस कार्यशाला का आयोजन किया गया है ताकि वे आवश्यकता के अनुसार आत्मरक्षा कर सकें और दूसरों को भी सुरक्षा प्रदान कर सकें।

एम् आर सिस्टम , टायस ने इस कार्यशाला की प्रशन्सा एवं छात्राओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि छात्राओं को आत्मरक्षा के प्रति सजगबनाने के लिए इस तरह के

शालिनी गुलियानी

Holi Celebrations

Red to white silence- The Widow

From the clink of red and green bangles,
To the bare-palms carrying a bulk of bleeding samples!
Draped in pure white with a veil of gloom on my face,
Dabbed on my lips to hide the bitter truth of grief's trace!

Living alone in the four walls that threatens me at every moment,
A solitary sower,with no hand of nourishment!
The white folds of my saree are in search of a rainbow,
But, a miserable platform is waiting for me along with the synonyms sitting in a wide row!

A magnificent kaleidoscope of life made up of fatigue,
At every footstep,it makes me more weak!
An air of melancholy surrounded the whole pillar,
Why do people blame me? Am I the killer?

His death affected my whole body,mind and heart,
A symmetrical body turned into a half as the other half has lost it's soul i.e. my husband's part!
I looked in the mirror and all I could see was the pain of loss,
I tried to smile hard, but all I could see was a long pause!

Can you watch the vibrant red,orange and russet shades of the sunset and simply close your eyes and mind?
I've seen the visuals of a beautiful,happily married bride!
Can you behold a bud unfurling it's petals into full bloom and not be awed by it's life and beauty?
Well,that's my life and the entire death duty!

My lips have taken a new form of being parallel,
I've lost the curves of the two little parts, they prefer to remain parallel!
From winter to summer,from rainy to spring to autumn,
Rapidly sinking inside a deep ocean!

Shabby looks with a shaved head,
Thinking,overthinking and now I'm in a great dread!
Looking at the dry bushes through a sleazy window,
I'm a red bride converted into a white widow!!

Binita Budathoki

Convocation Ceremony- Tecnia International School

Hawan Program- Tecnia International School

Kavi Samellan TIAS

A HOMELESS JOURNEY!

Carrying a yoyo in my hand
I grew up in a building made up of bricks
Where happiness is just a showoff trend
I have bucket full of experiences
From the very first steps in kinder garden
To the farewell party
But every story is going in vein due to the differences.

No I'm not saying that I lack a shed over my head
But yes I call myself homeless
As every night my pillow gets wet on my bed
Uproar is served as breakfast & dinner here.
These scars are left permanently
No its not possible to repair.

They are the author ,I'm their writing
But the editing of my life
Is analogous to slaughter
The language used is so thundering
I'm looking for company everywhere
Yes I'm not worth reading
As the author failed from blundering.

I'm that seed who can never become a flower
Because the roots are weak
Under this giant tower
Yes I get sunlight , I get water
But the stem is so fragile
And its bending as the temperature is getting hotter.

The yoyo is replaced by the cell phone
But the story is same
No worries if I'm grown
I'm still homeless
As none is ready to give up their throne.
I'm starving of warmth and love
Peace is my preference
Not anything other than this can be placed above
I pray this uproar gets replaced
With a beautiful bond
Rather than this prolonged debate.

But the ironical reality is
I suffer from homesickness
The fake smile on my face
Is the only witness.
And this ugly game of spouse
Made me A HOMELESS CHILD WITH A BIG HOUSE!

Binita Budathokl

MBA Guest Lectures

THIS MONTH

March 2, 1943: During World War II in the Pacific, a Japanese convoy was attacked by 137 American bombers as the Battle of Bismarck Sea began. The convoy included eight destroyers and eight transports carrying 7,000 Japanese soldiers heading toward New Guinea. Four destroyers and all eight transports were sunk, resulting in 3,500 Japanese drowned, ending Japanese efforts to send reinforcements to New Guinea.

•••

March 5, 1946: The "Iron Curtain" speech was delivered by Winston Churchill at Westminster College in Fulton, Missouri. Churchill used the term to describe the boundary in Europe between free countries of the West and nations of Eastern Europe under Soviet Russia's control.

•••

March 16, 1968: During the Vietnam War, the My Lai Massacre occurred as American soldiers of Charlie Company murdered 504 Vietnamese men, women, and children. Twenty-five U.S. Army officers were later charged with complicity in the massacre and subsequent cover-up, but only one was convicted, and later pardoned by President Richard Nixon.

•••

March 17th: Celebrated as Saint Patrick's Day commemorating the patron saint of Ireland.

•••

March 31, 1991: The Soviet Republic of Georgia, birth place of Josef Stalin, voted to declare its independence from Soviet Russia, after similar votes by Lithuania, Estonia and Latvia. Following the vote in Georgia, Russian troops were dispatched from Moscow under a state of emergency.

•••

Compilation: Honey Shah

International Women's Day 8 March

International Women's Day (IWD) has been observed since in the early 1900's - a time of great expansion and turbulence in the industrialized world that saw booming population growth and the rise of radical ideologies. International Women's Day is a collective

day of global celebration and a call for gender parity. No one government, NGO, charity, corporation, academic institution, women's network or media hub is solely responsible for International Women's Day. Many organizations declare an annual IWD theme that supports their specific agenda or cause, and some of these are adopted more widely with relevance than others.

"The story of women's struggle for equality belongs to no single feminist nor to any one organization but to the collective efforts of all who care about human rights," says world-renowned feminist, journalist and social and political activist Gloria Steinem. Thus International Women's Day is all about unity, celebration, reflection, advocacy and action - whatever that looks like globally at a local level. But one thing is for sure, International Women's Day has been occurring for well over a century - and continue's to grow from strength to strength.

A global web of rich and diverse local activity connects women from all around the world ranging from political rallies, business conferences, government activities and networking events through to local women's craft markets, theatric performances, fashion parades and more. Many global corporations actively support IWD by running their own events and campaigns.

By: Rishi Lunia

BASICS OF MEDIA

Floor Plan Pattern: A plan of the studio floor, showing the walls, the main doors, the location of the control room, and the lighting grid or batten.

•••

Props: Short for properties. Furniture and other objects used for set decoration and by actors or performers.

•••

Graphics Generator: Dedicated computer or software that allows a designer to draw, color, animate, store, and retrieve images electronically. Any desktop computer with a high capacity RAM and hard drive can become a graphics generator with the use of 2-D and 3-D software.

•••

Grayscale: A scale indicating intermediate steps from TV white to TV black. Usually measured with a nine- or seven-step scale.

•••

Scanning Area: Picture area that is scanned by the camera pickup device; in general, the picture area usually seen in the camera viewfinder and the preview monitor.

•••

Compilation: Rahul Mittal

HOMELESS SHELTERS, ANTITHESIS IN REALITY

Homeless roll out in homeless shelters. Major concern of shelters, to provide a safe and secure place for homeless women. But the reality is at far distant. In Delhi there are so many contingent of homeless lives. These shelters are fostering different types of homeless contingents, promising of providing security to homeless women and their daughters, but reality is prosthetic.

According to Hindustan times report, real life picture is blurred. Women daily go for earning, livelihood. The real source of earning for them is begging. They earn Rs300 to Rs500 on their bad day and may earn upto Rs1000 on their lucky day. After hard day they come back to homeless shelters with a fear of being molested by men.

In a statement a woman told Hindustan times " it is safe to spend night at pavements rather than in homeless shelters if you don't want you or your daughter to be molested or raped."

Another women stated that one day when she is sleeping, she feel someone's hand on her stomach but when she wakes up someone is taking her daughter. she also told that if someone complains about the same, no action is taken by the concerned authorities, rather they just taken by the concerned authorities, rather they just suggest victims to keep their mouth shut.

Thus the homeless women face much more exploitation in the so called shelters. The open sky is only safer place for them. Where we are talking about that sky is no limit for the women.

Shikha Gussain BJMC

Media -The Victim

So,it is the story based on ironical redemption.

Ah! never thought that it would be immensely strenuous to showcase society's hiccup in the society itself.

The five letters of today's worship god i.e. 'MEDIA' is more perilous than the coals of desolation.

The fourth estate of democracy has attained a manipulative status-'the hunk of globe' in the intercontinental shelf.

The sigh of losing a bud for a mother is less agonizing than consistently seeing her daughter's bleeding scandal.

Hoping for justice in this vicious circle of forgery commitments was the highest fallacy.

A 9 year old i.e. half adult got trapped in sharp threads of strong masked men,she couldn't manhandle.

The issue escalated like an 'algae-porn' that moved into the realms of inappropriate fantasy.

Making the amateur, the victim of all the cause was heavily outrageous.

The colours of the rainbow turned black and white.

The place of defending is in the jail, rectifying the wrong one; the decision was considered courageous.

Media acts as a bullet which affects the population's spirits; whether it is true or not, the majority believes what is shown on light.

Blood boiled in every vain
Tears streaming from thousand eyes
Like a flicker in every flame
'Cause media is built on sensationalism and lies.

Palak Gupta BJMC

Excel Workshop organized in Tecnia Institute of Advanced Studies

Vol. 13 **No.** 3
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"Fill what's empty, empty what's full, and scratch where it itches."
Duchess of Windsor

•••

"There are two ways of constructing a software design; one way is to make it so simple that there are obviously no deficiencies, and the other way is to make it so complicated that there are no obvious deficiencies. The first method is far more difficult."
C. A. R. Hoare

•••

"Make everything as simple as possible, but not simpler."
Albert Einstein

•••

"Forgive your enemies, but never forget their names."
John F. Kennedy

•••

"Well-timed silence hath more eloquence than speech."
Martin Fraquhar Tupper

•••

Compilation: Devashish Tondon

WINNERS v/s LOOSERS Part-68

Winners see the potential; Losers see the past.

•••

Winners are like a thermostat; Losers are like thermometers.

•••

Winners are a part of the team; Losers are apart from the team.

•••

Winners see the gain; Losers see the pain.

•••

Winners see possibilities; Losers see problems

•••

Winners use hard arguments but soft words; Losers use soft arguments but hard words.

•••

Winners stand firm on values but compromise on petty things; Losers stand firm on petty things but compromise on values.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **hodbjmc@tecnia.in**